

गांधी का शिक्षा दर्शन

गांधी शिक्षा दर्शन की तत्व मीमांसा

गांधीजी गीता की इस बात से सहमत हैं कि मूल तत्व दो हैं पुरुष और प्रकृति और इनमें ईश्वर सर्वश्रेष्ठ है। ईश्वर नित्य है इसलिए सत्य है पदार्थ अनित्य है इसलिए असत्य है।

गांधी शिक्षा दर्शन की ज्ञान मीमांसा

गांधीजी के अनुसार ज्ञान को दो वर्गों में बांटा जा सकता है। भौतिक विज्ञान एवं आध्यात्मिक ज्ञान विज्ञान के अंतर्गत भौतिक जगत एवं मनुष्य जीवन के विभिन्न पक्षों को रखा गया है। जबकि दूसरे वर्ग में सृष्टि के निर्माता आत्मा परमात्मा को रखा गया है।

गांधी शिक्षा दर्शन की आचार मीमांसा

गांधीजी के अनुसार मनुष्य जीवन का अंतिम उद्देश्य मुक्ति पाना है मुक्ति से उनका तात्पर्य आत्मा परमात्मा के नित्य स्वभाव को जानकर उनके शरण में पहुंचने को मुक्ति मानते थे।

शिक्षा दर्शन के आधारभूत सिद्धांत

- 1-मनुष्य ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ रचना है।
- 2-सृष्टि का निर्माता ईश्वर है।
- 3-संसार और ईश्वर दोनों सत्य एवं वास्तविक हैं।
- 4-सर्व उत्थान के लिए एकादशी व्रतों का पालन आवश्यक है।
- 5-मानव सेवा भक्ति का वास्तविक स्वरूप है।
- 6-स्वयं के कर्मों पर ही मनुष्य का विकास संभव है।
- 7-मोक्ष ईश्वर प्राप्ति और आत्मज्ञान ही मनुष्य का अंतिम लक्ष्य है।
- 8-मुझ प्राप्ति का साधन भक्ति है।
- 9-आत्मा परमात्मा का अंश है।

गांधीजी के अनुसार शिक्षा का अर्थ

गांधी जी भारत के प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षित देखना चाहते थे किंतु शिक्षित होने से उनका तात्पर्य साक्षर अथवा विद्यालय से डिग्री प्राप्त कर लेना ना था उनके अनुसार साक्षरता ना तो शिक्षा का प्रारंभ है और ना ही अंत। गांधीजी जीवन में चरित्र और नैतिकता पर विशेष बल देते थे। शिक्षा के द्वारा व्यक्तिगत विकास होना चाहिए।

गांधीजी के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य

- 1-सर्वांगीण विकास का उद्देश्य
- 2-शारीरिक विकास
- 3-मानसिक विकास
- 4-व्यक्ति के एवं सामाजिक विकास
- 5-जीविकोपार्जन का उद्देश्य
- 6-सांस्कृतिक विकास
- 7-चरित्र निर्माण का उद्देश्य
- 8-आध्यात्मिक स्वतंत्रता का उद्देश्य
- 9-आत्मानुभूति का उद्देश्य

गांधीजी के अनुसार शिक्षा का पाठ्यक्रम

नैतिक एवं धार्मिक शिक्षा, भाषा, सामाजिक अध्ययन, हस्तकला, सामान्य विज्ञान ,ललित कलाएं, शरीर शिक्षा।

गांधीजी के अनुसार शिक्षण विधि

- 1-स्वाअनुभव द्वारा सीखने की विधि
- 2-क्रियाविधि
- 3-सहयोगी विधि
- 4-सहसंबंध विधि
- 5-मौखिक विधि
- 6-अनुकरण विधि
- 7-श्रवण मना निधि आसन

गांधी जी के अनुसार शिक्षक की भूमिका

शिक्षक व समस्त मानवीय गुणों, समाज का आदर्श, ज्ञान का पुंज और सत्याचरण करने वाला होना चाहिए। गांधीजी के अनुसार शिक्षा का उत्तर दायित्व है कि वह बालकों में वह प्रतिभा और क्षमता उत्पन्न करें जिससे वह विभिन्न वस्तुओं के गुण दोषों और व भेदों को पहचान सके।

गांधीजी के अनुसार शिक्षार्थी का स्थान

गांधी जी की शिक्षा योजना में बालक को द्वितीय स्थान प्राप्त ने अपनी शिक्षा योजना को हस्तकला केंद्रित बनाया जिसमें बालक स्वयं कार्य करके सहयोग तथा अनुकरण के द्वारा शिक्षा प्राप्त करता है गांधीजी के अनुसार छात्र को उत्तम चरित्र वाला और श्रम का सम्मान करने वाला होना चाहिए।

गांधीजी जी के अनुसार विद्यालय

गांधीजी के अनुसार विद्यालय निर्धारित स्थानों में ना होकर बस्तियों में होना चाहिए वहां प्रत्येक प्रकार की सुविधाएं होनी चाहिए विद्यालय का वातावरण प्रेरणादायक एवं प्रभाव आत्मक होना चाहिए।

गांधीजी के अनुसार अनुशासन

गांधीजी अनुशासित जीवन व्यतीत करते थे और उसी में विश्वास रखते थे।

आधुनिक शिक्षा में गांधीजी का योगदान

- 1-आदर्शवाद के संदर्भ में
- 2-यथार्थ के संबंध में
- 3-प्रकृतिवादियों के संदर्भ में
- 4-प्रयोजनवाद के संदर्भ में
- 5-गांधी जी ने शिक्षा को मनुष्य के सर्वांगीण विकास के साधन के रूप में स्वीकार किया है।
- 6-इन्होंने कौशलों पर आधारित पाठ्यचर्या का निर्माण किया था
- 7-गांधी जी ने व्यक्ति और समाज दोनों के हितों का समान आदर किया